त्री-अंगी पूजा

1. प्रारंभिक नमन

नमन करते है, हम बुद्ध को,
जो सम्यक सम्बुद्ध है
जो मार्गदाता है।

नमन करते है, हम धम्म को,
जो बुद्ध की शिक्षाएं है,
जो अंधकार से,
प्रकाश की ओर ले जाती है।

नमन करते है, हम संघ को,
जिसमें सहचार्य है
बुद्ध के शिष्यों का
जो प्रेरणा देते है
जो मार्गदर्शन करते है।

(शाक्यमुनि / तारा मंत्र)

2. त्रिरत्न नमन

नमन करते है हम बुद्ध को,
और अभिलाषा रखते है,
उन्हे, अनुसरण करने की,
जैसे बुद्ध जन्मे मानव रूप में,
वैसे जन्मे हम भी
जिसे बुद्ध ने पराजित किया
उसे पराजित कर सकते है हम भी।
जिसे बुद्ध ने प्राप्त किया,
उसे प्राप्त कर सकते है हम भी।

नमन करते है हम धम्म को,
और अभिलाषा रखते है,
इसे अनुसरण करने की,
काया-वाचा-मन से
परिपुर्णता तक।
सत्य
जो सर्वांग समावेशक है,
मार्ग,
जो सर्वस्तर समावेशक है
अभिलाषा रखते है हम
इसका, अध्ययन, आचरण
और साक्षात्कार करने की।

नमन करते है हम संघ को,
और अभिलाषा रखते है,
इसे अनुसरण करने की,
जिसमें सहचार्य है
मार्गस्थ लोगों का
हर एक की कटीबध्दता से
संघ-वलय को,
निरंतर विशाल करने की।

(त्रिशरण-पंचशील / दसशील, सकारात्मक
पंचशील / दसशील)

3. बुध्दार्पण

नमन करते है, हम बुद्ध को,
करते है पुष्प अर्पण
पुष्प,
जो निर्मल, सुगंधित खिल र है आज
पुष्प,
जो कल मुरझायेंगे और पतीत होंगे,
वैसे ही,
पुष्प की भांति
पतीत होंगी हमारी काया भी।

नमन करते है हम बुद्ध को,
करते है दीप अर्पण
उन्हे,
जो स्वयं प्रकाश है
करते है प्रकाश अर्पण
उनके महा प्रदीप से
प्रज्वलित करते है
अन्तंर्दीप हमारा,
जिस से,
प्रज्वलित हो बोधी-प्रदीप
हृद् यांतर में हमारा।

नमन करते है हम बुद्ध को,
करते है धूप अर्पण,
धूप जिसका सुगंध होता है
वातावरण में व्याप्त
परिपूर्ण जीवन का सुगंध
जो धूप से
अधिक सुगंधित है,
विश्व की सभी दिशाओं में,
वैसे ही फैलता है।

(सभी मंत्र । धम्मपालन गाथा)